INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 12 | ISSUE - 10 | NOVEMBER - 2022

बिलासपुर ज़िले में जनजातीय महिलाओं की सामाजिक स्थिति और परिवर्तनशील भूमिका का अध्ययन

सुश्री आरती तिवारी
सहायक प्राध्यापक,
समाजशास्त्र (प्रभारी प्राचार्य) एस. बी. टी. महाविद्यालय, जिला बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश:

जनजातीय महिलाएँ अपने समुदायों के सामाजिक-आर्थिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, किंतु इसके बावजूद उन्हें गरीबी, निरक्षरता, लैंगिक असमानता और सामाजिक हाशियाकरण जैसी अनेक वंचनाओं का सामना करना पड़ता है। प्रस्तुत अध्ययन छत्तीसगढ़ राज्य के बिलासपुर ज़िले में जनजातीय महिलाओं की सामाजिक स्थिति तथा उनकी बदलती भूमिकाओं का विश्लेषण करता है। अध्ययन में परिवार, अर्थव्यवस्था, शिक्षा और सामुदायिक जीवन में जनजातीय महिलाओं की पारंपरिक एवं उभरती हुई भूमिकाओं का परीक्षण किया गया है। शोध के लिए प्राथमिक तथा द्वितीयक दोनों प्रकार के आँकड़ों का प्रयोग किया गया है, ताकि शिक्षा, सरकारी कल्याणकारी योजनाओं, आर्थिक सहभागिता और सामाजिक जागरूकता के माध्यम से उनकी सामाजिक स्थिति में आए परिवर्तनों को समझा जा सके। अध्ययन के निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि यद्यपि जनजातीय महिलाएँ अब भी कई संरचनात्मक चुनौतियों का सामना कर रही हैं, फिर भी उनकी शैक्षिक उपलब्धियों, आर्थिक सहभागिता तथा निर्णय-निर्माण की भूमिका में उल्लेखनीय परिवर्तन दिखाई देते हैं। अध्ययन का निष्कर्ष है कि जनजातीय महिलाओं की सामाजिक स्थिति में सुधार के लिए निरंतर नीतिगत समर्थन और समावेशी विकास रणनीतियाँ अत्यंत आवश्यक हैं।

मुख्य शब्द : *जनजातीय महिलाएँ, सामाजिक स्थिति, परिवर्तित भूमिकाएँ, लैंगिक असमानता, बिलासपुर ज़िला.*

प्रस्तावना:

जनजातीय समुदाय भारतीय समाज का एक महत्वपूर्ण अंग हैं और एक विशिष्ट सांस्कृतिक, सामाजिक तथा आर्थिक विरासत का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन समुदायों में जनजातीय महिलाओं का स्थान विशेष है, क्योंकि वे घरेलू दायित्वों के साथ-साथ आर्थिक गतिविधियों में भी सक्रिय रूप से भाग लेती हैं। उनके इस महत्त्वपूर्ण योगदान के बावजूद, ऐतिहासिक रूप से जनजातीय महिलाएँ निरक्षरता, गरीबी, स्वास्थ्य सेवाओं तक सीमित पहुँच तथा निर्णय-निर्माण प्रक्रियाओं में कम भागीदारी के कारण सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़ी रही हैं।

हाल के दशकों में आधुनिकीकरण, शिक्षा, नगरीकरण और राज्य द्वारा संचालित विकास कार्यक्रमों ने भारत की जनजातीय समाज व्यवस्था को प्रभावित किया है। इन परिवर्तनों का प्रभाव जनजातीय महिलाओं की पारंपरिक भूमिकाओं और सामाजिक स्थिति पर भी पड़ा है। छत्तीसगढ़ का बिलासपुर ज़िला गोंड, बैगा, कंवर और उरांव जैसी जनजातियों की उल्लेखनीय उपस्थिति वाला क्षेत्र है। इस ज़िले में शिक्षा, रोजगार के अवसरों, स्वयं सहायता पहलों और सरकारी कल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से धीरे-धीरे सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन देखने को मिला है।

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य बिलासपुर ज़िले में जनजातीय महिलाओं की सामाजिक स्थिति का अध्ययन करना तथा परिवार, आर्थिक और सामुदायिक क्षेत्रों में उनकी बदलती भूमिकाओं का विश्लेषण करना है।

अध्ययन के उद्देश्य:

प्रस्तुत अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

१) बिलासपुर ज़िले में जनजातीय महिलाओं की सामाजिक स्थिति का अध्ययन करना।

२) परिवार और समाज में जनजातीय महिलाओं की पारंपरिक भूमिकाओं का विश्लेषण करना।

३) शिक्षा, रोजगार तथा निर्णय-निर्माण के क्षेत्र में जनजातीय महिलाओं की बदलती भूमिकाओं का अध्ययन करना।

४) सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया में जनजातीय महिलाओं के समक्ष आने वाली चुनौतियों की पहचान करना।

५) जनजातीय महिलाओं की सामाजिक स्थिति में सुधार हेतु उपयुक्त उपाय सुझाना।

अनुसंधान पद्धति:

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अनुसंधान रूपरेखा को अपनाया गया है। प्राथमिक आँकड़े बिलासपुर ज़िलेके चयनित गाँवों से २०० जनजातीय महिला उत्तरदाताओं से संरचित प्रश्नावली और व्यक्तिगत साक्षात्कारों के माध्यम से एकत्र किए गए। द्वितीयक आँकड़े जनगणना प्रतिवेदन, सरकारी प्रकाशन, ज़िला सांख्यिकी पुस्तिकाएँ, शोध लेख तथा पुस्तकों से संकलित किए गए। उत्तरदाताओं के चयन हेतु सरल यादृच्छिक नमूना पद्धति का प्रयोग किया गया। आँकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत, सारणियों तथा गुणात्मक विवेचन के माध्यम से किया गया।

बिलासपुर ज़िले में जनजातीय महिलाओं की सामाजिक स्थिति और बदलती भूमिकाएँ:

बिलासपुर ज़िला छत्तीसगढ़ राज्य का एक प्रमुख ज़िला है, जहाँ ग्रामीण और वनवर्ती क्षेत्रों में निवास करने वाली जनजातीय जनसंख्या का अनुपात पर्याप्त है। गोंड, बैगा, कंवर तथा अन्य आदिवासी समुदाय इस ज़िले की सामाजिक संरचना का अभिन्न अंग हैं। इन समुदायों की आजीविका मुख्यतः कृषि, लघु वन उपज के संग्रह, पशुपालन और मज़दूरी पर आधारित है। पारंपरिक रीति-रिवाज़, नातेदारी व्यवस्था और सांस्कृतिक प्रथाएँ जनजातीय समाज की संरचना को गहराई से प्रभावित करती हैं। जनजातीय महिलाएँ घरेलू दायित्वों के साथ-साथ आर्थिक गतिविधियों में भी सक्रिय भूमिका निभाती हैं।

हाल के वर्षों में अवसंरचनात्मक विकास और विभिन्न विकास योजनाओं के कारण बिलासपुर ज़िले में धीरे-धीरे सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन देखने को मिले हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं, सड़क और संचार सुविधाओं तक बेहतर पहुँच तथा सरकारी कल्याणकारी योजनाओं के क्रियान्वयन ने जनजातीय समुदायों के जीवन स्तर को प्रभावित किया है। इन परिवर्तनों से जनजातीय महिलाओं को शिक्षा, आय-सृजन और सामाजिक विकास में भागीदारी के नए अवसर प्राप्त हुए हैं, यद्यपि विभिन्न क्षेत्रों और समुदायों में परिवर्तन की गति समान नहीं है।

बिलासपुर ज़िले में जनजातीय महिलाओं की सामाजिक स्थिति एक मिश्रित और संक्रमणकालीन स्वरूप को दर्शाती है। अपने समुदायों के भीतर उन्हें अपेक्षाकृत अधिक आवागमन की स्वतंत्रता और आर्थिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी प्राप्त है। वे कृषि कार्य, वन आधारित गतिविधियों और मज़दूरी में संलग्न रहकर पारिवारिक आय में प्रत्यक्ष योगदान देती हैं, जिससे परिवार में उनकी आर्थिक महत्ता स्थापित होती है।

फिर भी, इस महत्वपूर्ण योगदान के बावजूद जनजातीय महिलाओं की समग्र सामाजिक स्थिति कई संरचनात्मक कारकों से सीमित बनी हुई है। कम शैक्षिक स्तर, औपचारिक रोजगार के सीमित अवसर और अपर्याप्त स्वास्थ्य सुविधाएँ उनकी सामाजिक गतिशीलता और विकास को बाधित करती हैं। कम उम्र में विवाह, शीघ्र मातृत्व और अत्यधिक श्रमभार जैसी सामाजिक प्रथाएँ उनके शारीरिक स्वास्थ्य और सामाजिक कल्याण पर प्रतिकूल प्रभाव डालती हैं। इस प्रकार, उनकी आवश्यक आर्थिक भूमिका और अपेक्षाकृत कम सामाजिक मान्यता के बीच स्पष्ट विरोधाभास दिखाई देता है।

शिक्षा, आर्थिक अवसरों और विकास कार्यक्रमों के प्रभाव से जनजातीय महिलाओं की भूमिकाओं में धीरे-धीरे परिवर्तन हो रहा है। शिक्षा के प्रति जागरूकता में वृद्धि हुई है, यद्यपि साक्षरता स्तर अब भी अपेक्षाकृत कम है। निःशुल्क शिक्षा, छात्रवृत्ति, आवासीय छात्रावास

और मध्यान्ह भोजन योजनाओं जैसी सरकारी पहलों ने जनजातीय बालिकाओं के नामांकन को प्रोत्साहित किया है। शिक्षा से स्वास्थ्य, स्वच्छता, कानूनी अधिकारों और सामाजिक मुद्दों के प्रति जागरूकता बढ़ी है, जिससे महिलाओं के आत्मविश्वास और आकांक्षाओं में परिवर्तन आया है।

आर्थिक क्षेत्र में भी जनजातीय महिलाएँ कृषि, वन आधारित कार्य, मज़दूरी और लघु स्वरोज़गार के माध्यम से महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। स्वयं सहायता समूहों और आजीविका योजनाओं में सहभागिता से उन्हें पारिवारिक आय बढ़ाने और आंशिक वित्तीय स्वतंत्रता प्राप्त करने में सहायता मिली है। इससे उनका आत्मविश्वास और पारिवारिक स्तर पर सौदेबाजी की क्षमता सुदृढ़ हुई है।

घरेलू निर्णय-निर्माण में भी महिलाओं की भागीदारी धीरे-धीरे बढ़ी है। पारिवारिक व्यय, बच्चों की शिक्षा और स्वास्थ्य संबंधी निर्णयों में महिलाओं की राय को अधिक महत्व मिलने लगा है। यद्यपि पितृसत्तात्मक व्यवस्था का प्रभाव अब भी विद्यमान है, फिर भी आर्थिक योगदान, शिक्षा और जागरूकता कार्यक्रमों के कारण महिलाओं की आवाज़ सशक्त हुई है।

सामुदायिक जीवन में भी जनजातीय महिलाओं की भागीदारी में वृद्धि देखी जा रही है। स्वयं सहायता समूहों, ग्राम सभाओं और स्वास्थ्य, स्वच्छता तथा सामाजिक कल्याण से जुड़े कार्यक्रमों में उनकी सहभागिता उनके बदलते सामाजिक दायित्वों को दर्शाती है। इससे नेतृत्व क्षमता, सामूहिक पहचान और सामाजिक चेतना का विकास हुआ है।

इन परिवर्तनों के बावजूद जनजातीय महिलाओं के समक्ष अनेक चुनौतियाँ बनी हुई हैं। कम साक्षरता, स्वास्थ्य और पोषण की समस्याएँ, आर्थिक असुरक्षा, कौशल विकास के अवसरों की कमी तथा राजनीतिक प्रतिनिधित्व का अभाव उनके सशक्तिकरण में बाधक हैं। अतः शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और सामाजिक समावेशन पर केंद्रित निरंतर और लक्षित हस्तक्षेप आवश्यक हैं, ताकि बिलासपुर ज़िले में जनजातीय महिलाओं की सामाजिक स्थिति और जीवन गुणवत्ता में वास्तविक सुधार हो सके।

अध्ययन के परिणाम:

तालिका १ : घरेलू एवं आर्थिक गतिविधियों में जनजातीय महिलाओं की सहभागिता (N = २००)

गतिविधि	सक्रिय सहभागिता (%)	कभी-कभी सहभागिता (%)	सहभागिता नहीं (%)
घरेलू कार्य	९४%	५%	१%
कृषि गतिविधियाँ	७८%	१५%	७%
वन आधारित गतिविधियाँ	६२%	२३%	१५%
मज़दूरी / स्वरोज़गार	५५%	२८%	१७%

आँकड़े दर्शाते हैं कि जनजातीय महिलाएँ घरेलू तथा आर्थिक दोनों गतिविधियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं और पारिवारिक आजीविका एवं आय में उनका योगदान अत्यंत उल्लेखनीय है।

तालिका २ : जनजातीय महिलाओं में शिक्षा एवं जागरूकता स्तर (N = २००)

सूचक	हाँ (%)	नहीं (%)
बुनियादी साक्षरता (पढ़ना-लिखना)	५८%	४२%
स्वास्थ्य एवं स्वच्छता की जानकारी	६४%	३६%
सरकारी कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी	५२%	४८%
महिला अधिकारों की जानकारी	४६%	५४%

जनजातीय महिलाओं में शिक्षा और जागरूकता का स्तर धीरे-धीरे बढ़ा है, किंतु अब भी एक बड़ा वर्ग पर्याप्त जानकारी से वंचित है।

तालिका ३ : आर्थिक सहभागिता एवं स्वयं सहायता समूहों का आत्मविश्वास पर प्रभाव (N = २००)

सूचक	वृद्धि (%)	कोई परिवर्तन नहीं (%)
आत्मविश्वास	७१%	२९%
वित्तीय निर्णयों में आत्मविश्वास	६६%	३४%
समूह बैठकों में बोलने की क्षमता	५९%	४१%
नेतृत्व भूमिका ग्रहण करने की इच्छा	४३%	५७%

आर्थिक गतिविधियों और स्वयं सहायता समूहों में सहभागिता से जनजातीय महिलाओं के आत्मविश्वास में सकारात्मक वृद्धि हुई है।

तालिका ४ : घरेलू निर्णय-निर्माण में महिलाओं की भूमिका (N = २००)

निर्णय का क्षेत्र	सक्रिय भूमिका (%)	सीमित भूमिका (%)	कोई भूमिका नहीं (%)
घरेलू व्यय	६३%	२७%	१०%
बच्चों की शिक्षा	६८%	२२%	१०%
स्वास्थ्य संबंधी निर्णय	६१%	२९%	१०%
प्रमुख पारिवारिक निर्णय	३८%	४१%	२१%

घरेलू निर्णय-निर्माण में महिलाओं की भागीदारी में वृद्धि हुई है, किंतु प्रमुख पारिवारिक निर्णयों में उनकी सहभागिता अभी भी असमान बनी हुई है।

तालिका ५ : सामाजिक सशक्तिकरण को प्रभावित करने वाली संरचनात्मक चुनौतियाँ (N = २००)

चुनौती	उत्तरदाता (%)
निम्न शैक्षिक स्तर	५७%
कमजोर स्वास्थ्य एवं पोषण	६२%
सीमित रोजगार अवसर	५९%
गरीबी एवं आर्थिक असुरक्षा	६६%
राजनीतिक प्रतिनिधित्व का अभाव	७१%

प्रगति के बावजूद संरचनात्मक चुनौतियाँ जनजातीय महिलाओं के पूर्ण सामाजिक सशक्तिकरण को सीमित करती हैं। संख्यात्मक आँकड़ों से स्पष्ट होता है कि बिलासपुर ज़िले में जनजातीय महिलाएँ घरेलू और आर्थिक गतिविधियों में केंद्रीय भूमिका निभाती हैं। शिक्षा, जागरूकता तथा आर्थिक सहभागिता से उनके आत्मविश्वास और निर्णय-निर्माण की भूमिका में सुधार हुआ है। तथापि, गरीबी, निम्न शिक्षा स्तर और राजनीतिक प्रतिनिधित्व की कमी जैसी स्थायी संरचनात्मक समस्याएँ उनके पूर्ण सामाजिक सशक्तिकरण में बाधक बनी हुई हैं।

चर्चा (Discussion):

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष यह रेखांकित करते हैं कि बिलासपुर ज़िले में जनजातीय महिलाएँ घरेलू प्रबंधन तथा आर्थिक गतिविधियों- दोनों में केंद्रीय भूमिका निभाती हैं। कृषि, वन आधारित कार्य, मज़दूरी और घरेलू दायित्वों में उनकी सक्रिय सहभागिता पारिवारिक जीविका और आर्थिक स्थिरता में उनके महत्त्वपूर्ण योगदान को दर्शाती है। इसके बावजूद, उनके श्रम और योगदान को प्रायः कम आँका जाता है और पर्याप्त मान्यता नहीं मिल पाती, जिससे परिवार और समुदाय में महिलाओं की आर्थिक भूमिका तथा सामाजिक स्थिति के बीच विद्यमान अंतर स्पष्ट होता है।

जनजातीय महिलाओं में शिक्षा और जागरूकता स्तर में धीरे-धीरे हुआ सुधार विद्यालयी शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक कल्याण से संबंधित सरकारी पहलों के सकारात्मक प्रभाव को दर्शाता है। साक्षरता में वृद्धि तथा स्वास्थ्य, स्वच्छता और कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी से महिलाएँ अपने परिवार और स्वयं के कल्याण से जुड़े निर्णय अधिक समझदारी से लेने में सक्षम हुई हैं। तथापि, अध्ययन यह भी

संकेत देता है कि शैक्षिक प्रगति समान रूप से नहीं हुई है और अब भी अनेक महिलाएँ उच्च शिक्षा तथा अपने अधिकारों की समुचित जानकारी से वंचित हैं।

आर्थिक गतिविधियों और स्वयं सहायता समूहों में सहभागिता जनजातीय महिलाओं के आत्मविश्वास और आत्मसम्मान को बढ़ाने वाला एक महत्वपूर्ण कारक सिद्ध हुई है। आय-सृजन कार्यों और सामूहिक प्रक्रियाओं से महिलाओं की अभिव्यक्ति क्षमता, वित्तीय प्रबंधन और समूह चर्चाओं में सहभागिता में सुधार हुआ है। इससे परिवार के भीतर उनकी सौदेबाजी की क्षमता और मानसिक सशक्तिकरण को बल मिला है, यद्यपि नेतृत्व भूमिकाएँ और निर्णायक अधिकार अभी भी कई महिलाओं के लिए सीमित बने हुए हैं।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि घरेलू निर्णय-निर्माण में जनजातीय महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है, विशेषकर दैनिक व्यय, बच्चों की शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल से जुड़े मामलों में। फिर भी, प्रमुख पारिवारिक निर्णयों में महिलाओं की भूमिका असमान बनी हुई है, क्योंकि पारंपरिक पितृसत्तात्मक मान्यताएँ और पुरुष प्रधानता अब भी पारिवारिक संरचना को प्रभावित करती हैं। इससे यह संकेत मिलता है कि केवल आर्थिक योगदान से समान निर्णय-निर्माण सुनिश्चित नहीं हो सकता, बल्कि इसके लिए व्यापक सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन आवश्यक है।

शिक्षा, आर्थिक सहभागिता और आत्मविश्वास में प्रगति के बावजूद, संरचनात्मक चुनौतियाँ जनजातीय महिलाओं के पूर्ण सामाजिक सशक्तिकरण में बाधक बनी हुई हैं। गरीबी, निम्न शैक्षिक स्तर, कमजोर स्वास्थ्य एवं पोषण, सीमित रोजगार अवसर और राजनीतिक प्रतिनिधित्व का अभाव जैसी समस्याएँ आज भी विद्यमान हैं। ये निष्कर्ष दर्शाते हैं कि विकास हस्तक्षेपों से सकारात्मक परिवर्तन की शुरुआत अवश्य हुई है, किंतु गहराई से जमी असमानताओं को दूर करने और दीर्घकालिक सामाजिक सशक्तिकरण सुनिश्चित करने के लिए निरंतर और लक्षित प्रयास आवश्यक हैं।

निष्कर्ष:

प्रस्तुत अध्ययन का निष्कर्ष है कि बिलासपुर ज़िले में जनजातीय महिलाएँ परिवार और समुदाय के भीतर एक महत्वपूर्ण, किंतु अपेक्षाकृत वंचित स्थिति में हैं। वे घरेलू प्रबंधन, कृषि, वन आधारित गतिविधियों और मज़दूरी में सक्रिय योगदान देकर पारिवारिक आजीविका और स्थानीय अर्थव्यवस्था का आधार बनती हैं। इसके बावजूद, निम्न शैक्षिक स्तर, कमजोर स्वास्थ्य एवं पोषण स्थितियाँ, औपचारिक रोजगार तक सीमित पहुँच तथा पितृसत्तात्मक सामाजिक मान्यताओं के कारण उनकी समग्र सामाजिक स्थिति सीमित बनी हुई है। अध्ययन यह भी दर्शाता है कि शिक्षा के प्रति बढ़ती जागरूकता, आय-सृजन गतिविधियों में सहभागिता, स्वयं सहायता समूहों से जुड़ाव तथा सरकारी कल्याणकारी और विकास कार्यक्रमों के संपर्क के परिणामस्वरूप जनजातीय महिलाओं की भूमिकाओं में क्रमिक परिवर्तन हो रहा है। इन परिवर्तनों से आत्मविश्वास में वृद्धि, स्वास्थ्य और सामाजिक मुद्दों के प्रति जागरूकता तथा घरेलू निर्णय-निर्माण में सहभागिता बढ़ी है, विशेषकर बच्चों की शिक्षा और स्वास्थ्य से जुड़े मामलों में। तथापि, प्रमुख पारिवारिक और सामुदायिक निर्णयों में महिलाओं की भागीदारी अभी भी असमान है। समग्र रूप से, अध्ययन इस बात पर बल देता है कि बिलासपुर ज़िले में जनजातीय महिलाओं के दीर्घकालिक सामाजिक सशक्तिकरण के लिए निरंतर, समावेशी और लैंगिक संवेदनशील नीतियों एवं हस्तक्षेपों की आवश्यकता है।

संदर्भ:

1) *Bhattacharya, S., & Murmu, S. C. (2019). Women in tribal society: Balancing multiple roles in a family. Journal of Cultural and Social Anthropology, 1(4), 1–12.*
2) *Binjha, S. (2020). Tribal women in India and social inclusion. Journal of Emerging Technologies and Innovative Research, 6(1), 1254-1262.*
3) *Ellena, T., & Nongkynrih, A. K. (2017). Gender relations and decision-making in matrilineal tribal society. Journal of North East India Studies, 7(1), 45-58.*
4) *Gupta, P. (2016). Status of tribal women in India: Some observations. Anudhyan: An International Journal of Social Science, 1(1), 181-188.*
5) *Kapur, R. (2019). Status of tribal women in India. International Journal of Research in Social Sciences, 9(6), 114-128.*

6) *Leoni, G. S., & Indhumathi, G. (2018). Social empowerment of tribal women: A study with special reference to Dindigul and Nilgiri districts. Journal of Commerce and Management, 5(11), 34-45.*
7) *Manna, S., & Sarkar, S. (2016). Socio-economic status of tribal women: A case study. Journal of Tribal Development, 4(2), 88-95.*
8) *Mishra, N., Sahoo, R. K., & Mohanty, S. (2012). Changing status of tribal women in India: A review. Indian Journal of Social Research, 53(4), 311-320.*
9) *Nayak, P., & Mahanta, B. (2016). Gender disparity and women empowerment in Assam. International Journal of Applied Management Research, 3(1), 1-22.*
10) *Rafi, M., et al. (2019). Socio-economic status and empowerment of tribal women in central India. Indian Journal of Research in Anthropology, 5(2), 123-135.*
11) *Sengupta, S. (2018). Gender and tribal identity: A sociological analysis of tribal women in West Bengal. Sociological Bulletin, 67(2), 145-160.*
12) *Sindhi, S. (2012). Status of tribal women in India. International Journal of Social Sciences and Management Studies, 1(3), 46-54.*
13) *Singh, B. P., & Chaturvedi, S. (2019). Socio-cultural impact and changing scenario of tribal women. Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education, 16(6), 1234-1240.*
14) *Suresh, K., & Swamy, M. N. (2019). Socio-economic status of tribal women in India: A study of select districts. International Journal of Scientific Research, 8(5), 67-72.*
15) *Tiwari, A. (2014). Status of tribal women in India: A contemporary perspective. Annals of the Romanian Society for Cell Biology, 18(2), 134-142.*
16) *Sukumaran, M., & Anji, A. (Eds.). (2020). Empowerment of tribal women in South India: Gender perspectives. Kalpaz Publications.*
17) *Trivedi, T., Sharma, K., Salpekar, A., & Natarajan, S. R. (2020). Tribal women and society. Kindle Edition.*
18) *Publications Division. (2020). Tribal women in development. Government of India.*
19) *Singh, B. P., & Chaturvedi, S. (2020). Empowerment of tribal women in India: Issues and perspectives. Gyan Books.*
20) *IGNOU. (2018). Women in tribal societies (Unit 5). In Social Stratification and Gender (BANC-133). eGyanKosh.*